अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधी साहित्य शोध का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधी साहित्य का पुनरावलोकन अत्यंत महत्वपूर्ण कदम हैं। शोध कार्य के अंतर्गत शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है।

वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को बढ़ाया जा सकता है। संबंधी साहित्य से तात्पर्य है, अनुसंधान की समस्या से संबंधित सभी प्रकार के साहित्य पुस्तकों ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध, प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से हैं। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा आदि तैयार करने एवं अनुसंधान कार्य को उचित दिशा में बढ़ाया नहीं जा सकता। जब तक अनुसंधानकर्ता को ज्ञान न हो जाये कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? तब तक न तो समस्या का निर्धारण कर सकता हैं और न ही दिशा में सफल हो सकता हैं।

2.2 साहित्य पुनरावलोकन का महत्व एवं योगदान

अनुसंधान प्रक्रिया की सबसे पहली सीढ़ी संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण एवं उसकी समीक्षा है। अनुसंधान की समस्या का अंतिम रूप से चयन करने से पूर्व शोधकर्ता को समस्या संबंधी साहित्य एवं सूचनाओं को एकत्र करना तथा उनकी समीक्षा करना अत्यंत आवश्यक होता है–

पुनरावलोकन शोधकर्ता का अनुसंधान संबंधी ज्ञान बढ़ता है। उसे अनुसंधान की भिन्न–भिन्न प्रक्रियाओं का ज्ञान होता है। उसे पहले अध्ययनों में प्रयुक्त यंत्र व औजारों की भी जानकारी मिलती है तथा सांख्यिकीय विधियों की अंतदृष्टि भी मिल जाती है।

- शोधकर्ता को अपने क्षेत्र व समस्या को सीमित करने एवं उसे दिशा देने में सहायता मिलती है। उसे अपनी समस्या के परिसीमन व उसकी परिभाषा करने में भी सहायता मिलती है।
- शोधकर्ता अनुसंधान करते समय अलाभप्रद व अनुपयोगी समस्याओं से बच सकता है। वह ऐसे क्षेत्र चुन सकता है जिनमें लाभदायक खोज हो सकेगी और उसके प्रयासों से ज्ञान में सार्थक वृद्धि होगी।
- मौलिक एवं उपयोगी अनुसंधान तभी संभव है, जब शोधकर्ता को इस बात की अच्छी जानकारी हो कि उसकी समस्या से संबंधित क्षेत्र में क्या कुछ पहले हो चुका है, अन्यथा जो हो चुका है, उसी की पुनरावृत्ति होती रहेगी। यदि अध्ययन के परिणामों की स्थिरता व वैद्यता भलीप्रकार सिद्ध हो चुकी है तो उसे दोहराना निरर्थक होगा।

इन पुनरावलोकन के माध्यम से पारम्परिक विद्यालय व स्वतंत्रता आधारित विद्यालयों की तुलना की गई है। जिसके माध्यम से स्वतंत्रता के महत्व को प्रकाश में लाया गया है। इन पुनरावलोकन में छात्रों के अभिप्रेरणा स्तर, आत्मविश्वास, स्वनिर्भरता, उत्सुकता, जबावदेही, समालोचनात्मकता का अध्ययन किया गया है।

पारम्परिक विद्यालय में जो मानकों का अनुपालन करते है व केवल संज्ञानात्मक विकास को महत्व प्रदान करते है। कठोर पाठ्यक्रम का अनुपालन करते है। इसके विपरीत स्वतंत्रता आधारित विद्यालय छात्र केन्द्रित उपागम को महत्व प्रदान करते है व स्वनिर्देशन लोकतांत्रिक रूप से निर्णय लेने की क्षमता व लचीले पाठ्यक्रम का अनुसरण करते है।

2.3 पूर्व में किये गये शोध

• Aikin (1942)

आइकीन ने 1942 में अपने शोध में शिक्षा के क्षेत्र में प्रगतिशील उपागमों का औपचारिक रूप से अध्ययन किया। उन्होंने प्रगतिशील विद्यालय व पारम्परिक विद्यालय के मध्य 8 साल तक तुलनात्मक अध्ययन किया। उनके शोध में उन्होनें दोनों ही

विद्यालयों से 1500-1500 छात्रों का चयन किया। प्रगतिशील विद्यालय मेंअधिगमकर्ता केन्द्रित विधियों का प्रयोग किया जाता था तथा उनके स्वनिर्भरता पर ध्यान केन्द्रित किया जाता था। प्रगतिशील विद्यालय में छात्रों की रूचियों का विशेष ध्यान रखा जाता, प्रोजेक्ट विधियों का प्रयोग व छात्र पर संपूर्ण ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसके विपरीत पारंपरिक विद्यालय में शिक्षक केन्द्रित विधियों का प्रयोग किया जाता, वाचन शैली का प्रयोग व पाठ्यक्रम संकुचित था।

निष्कर्ष

पारम्परिक विद्यालय की तुलना में प्रगतिशील विद्यालय के छात्र ज्यादा सफल रहे उन्होंने उच्च श्रेणी अर्जित की उनकी सैद्धांतिक उपलब्धि व बौद्धिक उत्सुकता उच्च थी। उनमें समस्या समाधान कौशल व सामाजिक कौशल अर्थात् वातावरण के प्रति ज्यादा सतर्क पाये गये।

- **Nagata & Kikuchi (2002)**

नगाता एवं किकुची ने 2002 में स्वतंत्रता आधारित उपागम का अनुसरण करने वाले विद्यालयों का व्यापक अध्ययन किया। स्वतंत्र विद्यालय एकीकृत अधिगम को महत्व देते है।

निष्कर्ष

कक्षा में उपस्थित छात्रों में से 78 प्रतिशत छात्र के विचारों में सजीवता पायी गई व वे ज्यादा सक्रिय पाये गये।

- **Deci Ed & Ryan Richard (1985)**

अभिप्रेरणा व स्वायत्तता की अवधारणा का स्वतत्रंता आधारित शिक्षा के साथ संबंध का अध्ययन।

नियंत्रणकारी वातावरण की तुलना में स्वायत्तता आधारित वातावरण, छात्र व उसकी आवश्यकताओं व उसके अवधारणात्मक अधिगम के साथ संबंधित है। व ऐसे वातावरण में छात्र में सृजनात्मकता का उच्चस्तर पाया जाता है। ऐसे वातावरण में छात्रों में उच्च आतंरिक अभिप्रेरणा का स्तर पाया गया। अनुसंधान के अनुसार मानव को आंतरिक रूप से स्वसंचालित होने की, स्व-नियत्रंण व स्वयं के क्रियाकलॉपों का स्वाशासी होना चाहिए।